>

Title: Situation arising out of non-payment of wages to the labourers working in Bharat Wagon Factory in Muzaffarpur and Mokama in Bihar.

**डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली):** सभापति महोदया, रेलवे ने दिवाली और छठ के अवसर पर 60 विशेष गाड़ियां चलाई और रेलवे ने दावा किया कि जो लोग दिवाली या छठ के पर्व में शामिल होना चाहते हैं उनके लिए हमने प्रबंध किया। लेकिन भारत सरकार का वैगन कारखाना मुजफ्फरपुर में है और वर्ष 2008 में रेलवे ने उसको टेक-ओवर किया था। लेकिन साल भर से कामगारों को वेतन नहीं मिल रहा है। वेतन का पुनरीक्षण भी नहीं हुआ है और न ही उनको वेतन मिल रहा है। जो रेल के कर्मचारी नहीं हैं, उनके लिए आप रेल चला रहे हैं लेकिन जो आपके कर्मचारी हैं, उनके पर्व खराब जा रहे हैं। साल भर से उनको वेतन नहीं मिल रहा है। कई कर्मचारी उसमें भूख और बीमारी से मर गये और उनको वेतन भी नहीं मिल रहा है तथा न ही उनके वेतन का पुनरीक्षण हुआ है। उसका मैनेजमेंट ठीक नहीं है और इसके साथ ही कोलकाता में वर्ष 2010 में भी भारत सरकार का कारखाना टेक-ओवर किया गया, एक को 2008 में रेलवे ने टेक-ओवर किया और इसका बुरा हाल है। लेकिन 2010 में जो टेक-ओवर हुआ, वहां के कर्मचारियों के वेतन का भी पुनरीक्षण हुआ और उनको नकद भी मिल रहा है। इस तरह से यह भेदभाव भी बरता जा रहा है कि दो हाथियों को एक साथ बांध दिया जाए और एक को दाना दिया जाए और एक को नहीं दिया जाए तो वह सनक जाता है, वह खून करता है। अब यदि यही व्यवहार आदमी के साथ किया जाए तो ठीक नहीं है। यह बहुत बड़ा अन्याय भारत वैगन कारखाना के मजदूरों के साथ हो रहा है।

इसलिए मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि इस कारखाने को चलाने के लिए पूंजी और दूसरे, पुनरीक्षित वेतनमान के साथ बकाये का भुगतान किया जाए और तीसरे निकाले गये कर्मचारियों को बहाल किया जाए जिससे मैनेजमेंट ठीक चले। यह कारखाना बढ़िया है, मुनाफे में चलने वाला है और उपयोगी है तथा उसमें हजारों कामगार हैं। रेलवे उसको ठीक ढंग से चलाए, यही हमारी सरकार से मांग है।